विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। –वाल्मीकि

अपना घर साफ होगा तो नगर साफ होगा .... एक क्रांतिकारी कदम

जयपुर, गुलाबी नगरी के नाम से प्रसिद्ध यह शहर अपनी ऐतिहासिक धरोहर, भव्य महलों और जीवंत संस्कृति के लिए जाना जाता है। लेकिन वर्षों से यहां की सबसे बड़ी समस्या रही है – सफाई व्यवस्था की कमी। गलियों में फैला कचरा, सड़कों पर जमा गंदगी और ड्रेनेज सिस्टम की लापरवाही ने शहर की सुंदरता को धूमिल कर दिया है। ऐसे में नव नियुक्त नगर निगम आयुक्त ओम कसेरा ने अपनी पहली ही बैठक में एक क्रांतिकारी बयान देकर सबका ध्यान आकर्षित कर लिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि पहले अपना घर यानी निगम मुख्यालय की सफाई पर ध्यान देना जरूरी है, उसके बाद ही पूरे जयपुर की सफाई व्यवस्था को मजबूत बनाया जा सकेगा। यह बयान न केवल व्यावहारिक है, बल्कि एक नई मुहिम का आगाज भी करता है। आयुक्त का यह दृढ़ संकल्प कि नगर को साफ रखने की जिम्मेदारी हमारी है, लेकिन पहले घर तो साफ हो, शहरवासियों में आशा की किरण जगा रहा है। सप्ताह भर के अंदर स्थिति सुधार न होने पर जिम्मेदार अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी ने नौकरशाही में हड़कंप मचा दिया है। प्रश्न वाजिब है – इन जिम्मेदार अफसरों का इसके अलावा और क्या काम है? यह पहल इंदौर की तर्ज पर जयपुर को सफाई में शीर्ष शहर बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम है, जो शहर को ग्रीन सिटी के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी।

जयपुर की सफाई व्यवस्था की वर्तमान स्थिति बेहद चिंताजनक है। शहर की आबादी करीब 40 लाख से अधिक हो चुकी है, जबकि कचरा उत्पादन प्रतिदिन 1500 टन के आसपास पहुंच गया है। नगर निगम के कुछ सीमित मात्रा में सफाई कर्मचारी हैं, जो इस बोझ को संभालने में पूरी तरह असमर्थ साबित हो रहे हैं। मुख्य सड़कों पर तो सफाई का दिखावा होता है, लेकिन आंतरिक गलियां, बस्तियां और बाजार क्षेत्र कचरे के ढेरों से पटे पड़े हैं। आमेर रोड, अजमेर रोड और टोंक रोड जैसे प्रमुख मार्गों पर भी प्लास्टिक कचरा और निर्माण मलबा बिखरा रहता है। ड्रेनेज सिस्टम की हालत और खराब है। मानसून में जलभराव आम बात हो जाती है, क्योंकि नालियां मलबे से भरी रहती हैं। सिविल लाइंस, मालवीय नगर और वैशाली नगर जैसे पॉश इलाकों में भी गंदगी की शिकायतें आम हैं। पिछले वर्ष स्वच्छ भारत सर्वेक्षण में जयपुर 118वें स्थान पर खिसक गया था, जो पहले की तुलना में गिरावट दर्शाता है। कारण स्पष्ट हैं – कचरा संग्रहण की अपर्याप्त व्यवस्था, सेग्रीगेशन की कमी और डंपिंग ग्राउंड की समस्या। केवल 20 प्रतिशत कचरा ही सही ढंग से अलग किया जाता है, बाकी खुले में जलाया या फेंका जाता है। इससे न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है, बल्कि स्वास्थ्य समस्याएं जैसे डेंगू, मलेरिया और चर्म रोग बढ़ जाते हैं। अस्पतालों में प्रतिदिन दर्जनों मरीज कचरे से जुड़ी बीमारियों के आते हैं। व्यापारिक क्षेत्रों में, जैसे जोहरी बाजार, त्रिपोलिया बाजार और सुभाष चौक पर दुकानदारों द्वारा सड़क पर कचरा फेंकना आम प्रथा है। फुटपाथों पर ठेलों और रेहड़ियों से निकला मलबा पैदल यात्रियों के लिए खतरा बन जाता है। आवासीय कॉलोनियों में, जैसे मानसरवर और सी-स्कीम, सोसाइटी वाले अपनी जिम्मेदारी न निभाते हुए निगम पर दोषारोपण करते हैं। वास्तव में, सफाई एक सामूहिक जिम्मेदारी है, लेकिन निगम की लापरवाही मुख्य समस्या बनी हुई है। आयुक्त कसेरा का बयान इसी कमी को दूर करने का प्रयास है। उन्होंने मुख्यालय की सफाई से शुरुआत कर अधिकारियों को संदेश दिया है कि ऊपर से नीचे तक बदलाव आना जरूरी है।

इंदौर की सफाई व्यवस्था जयपुर के लिए एक आदर्श उदाहरण है। मध्य प्रदेश का यह शहर लगातार छह वर्षों से स्वच्छ भारत सर्वेक्षण में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका है। इंदौर में प्रतिदिन 1500 टन से अधिक कचरा उत्पन्न होता है, लेकिन 100 प्रतिशत संठाहण सुनिश्चित होता है। यहां की सफलता का राज है – कचरा सेग्रीगेशन, जनभागीदारी और सख्त निगरानी। इंदौर नगर निगम ने हर घर में दो बिन सिस्टम लागू किया है। एक सूखे कचरे के लिए और दूसरा गीले के लिए। दुकानों और बाजारों में भी यही नियम है। कचरा संठाहण के लिए जीपीएस ट्रैकर वाली गाड़ियां चलाई जाती हैं, जो ऐप के माध्यम से ट्रैक होती हैं। यदि कोई गाड़ी देरी से पहुंचे, तो तुरंत शिकायत दर्ज हो जाती है। डंपिंग ग्राउंड को वेस्ट टू एनर्जी प्लांट में बदल दिया गया है, जहां कचरा से बिजली उत्पन्न होती है। इंदौर में सफाई कर्मचारियों को इंसेंटिव दिया जाता है और उनकी संख्या पर्याप्त है। बाजार समितियों ने स्वच्छता अभियान को अपनाया है, जहां दुकानदार स्वयं सफाई करते हैं। शहर में 5000 से अधिक स्वच्छता मित्र तैनात हैं, जो जनता को जागरूक करते हैं। परिणामस्वरूप, इंदौर की सड़कें चकाचौंध साफ रहती हैं। जयपुर इस मॉडल को अपना सकता है। उदाहरण के तौर पर, जयपुर के बाजारों में इंदौर जैसी बिन सिस्टम लगाई जाए, तो व्यापारी वर्ग सहयोग करेगा। आयुक्त कसेरा की यह पहल जयपुर शहर की काया बदल सकती है तथा कुछ त्वरित निर्णय जयपुर में सफाई क्रांति ला सकते है। इंदौर ने साबित किया है कि सख्ती और जनसहयोग से कोई भी शहर स्वच्छ बन सकता है। जयपुर की आबादी और कचरा मात्रा इंदौर जितनी ही है, अतः यह मॉडल यहां फिट बैठेगा।

इंदौर की सफाई व्यवस्था जयपुर के लिए एक आदर्श उदाहरण है, मध्य प्रदेश का यह शहर लगातार छह वर्षों से स्वच्छ भारत सर्वेक्षण में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका है

आयुक्त ओम कसेरा की यह पहल शहर के व्यापारी वर्ग को भी उत्साहित कर रही है। जोहरी बाजार, बापू बाजार और चौड़ा रस्ता जैसे व्यस्त बाजारों के व्यापारी संगठन स्वच्छता मुहिम में शामिल होने को तैयार हैं। वे कहते हैं कि साफ बाजार से व्यापार बढ़ेगा। जरूरत है आम आदमी की स्वच्छ सोच को मजबूत करने की। स्कूलों में बच्चों को सेग्रीगेशन सिखाया जाए, कॉलोनियों में आरडब्ल्यूए को जिम्मेदारी सौंपी जाए। नगर निगम को ऐप लॉन्च करना चाहिए, जहां शिकायत दर्ज कर फोटो अपलोड की जा सके। जीपीएस वाली सफाई वाहन और सीसीटीवी निगरानी से पारदर्शिता आएगी। ग्रीन सिटी के सपने को साकार करने के लिए प्लास्टिक प्रतिबंध, वृक्षारोपण और साइकिल ट्रैक आवश्यक हैं। आयुक्त के औचक निरीक्षण से अफसरों में भय पैदा होगा। स्वच्छता आदत बने, मजबूरी न रहे। यदि सप्ताह भर में मुख्यालय साफ हो गया, तो पूरे शहर में लहर दौड़ेगी। जिम्मेदार अफसरों को अब बहाने नहीं बनाने होंगे। जयपुर को इंदौर बनाने की यह मुहिम सफल होगी, यदि सभी पक्ष सहयोग करें। सरकार को बजट बढ़ाना होगा – कम से कम 200 करोड़ रुपये वार्षिक। निजी कंपनियों से सीएसआर फंड लिए जाएं। स्वयंसेवी संगठनों को जोड़ा जाए। दीपावली, होली जैसे त्योहारों पर विशेष सफाई अभियान चलें। पार्कों और तालाबों को साफ कर पर्यटन बढ़ेगा। स्वास्थ्य विभाग से समन्वय कर बीमारियों पर अंकुश लगे। अंततः, स्वच्छ जयपुर ही ग्रीन सिटी बनेगा, जहां पर्यावरण सुरक्षित रहेगा। आयुक्त कसेरा का संकल्प शहरवासियों के लिए प्रेरणा है। आइए, हम सब मिलकर इस क्रांति का हिस्सा बनें। स्वच्छता ही सेवा है।

अविनाश जोशी
अतिथि संपादक
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

राशिफल गुरूवार 9 अप्रैल, 2026

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरुवार, विक्रम सम्वत 2083, मूल नक्षत्र प्रातः 8.48 तक, परिद्य योग सायं 5.58 तक, विष्टिकरण प्रातः 8.11 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति – सूर्य-मीन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मीन, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में संचार करेगा।

आज रवियोग प्रातः 8.48 तक है। आज भद्रा प्रातः 8.11 तक है।

श्रेष्ठ चौघाडिया – शुभ-सूर्योदय से 7.47 तक, चट 10.55 से 12.28 तक, लाभ-अमृत 12.28 से 3.36 तक, शुभ 5.10 से सूर्यास्त तक

राहुकाल – 1.30 से 3.00 तक सूर्योदय 6.13 सूर्यास्त 6.44

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
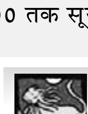
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

धनु
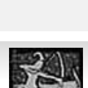
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बडेगा। आवश्यक ओर महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
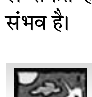
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज मित्रों-रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कन्या
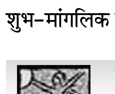
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बडेगी। अथितियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबन्ध प्राप्त होंगे।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग-दौड रहेगी। अर्नगल कार्यों में समय खराब रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन
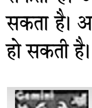
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
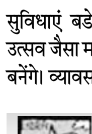
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होंगे।

कुंभ
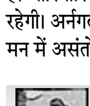
आर्थिक-वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

कर्क
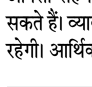
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
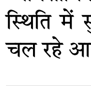
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
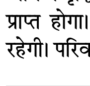
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं।

आइए, हम मिलकर भारत की नारी शक्ति को सशक्त करें

आज देश के हर सेक्टर में नारी शक्ति मिसाल बन रही है

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

21वीं सदी की विकास यात्रा में हमारा भारत एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक क्षण की ओर आगे बढ़ रहा है। आने वाले दिनों में हम अपने लोकतंत्र को और मजबूत करने वाली एक बड़ी पहल के साक्षी बनने वाले हैं। यह ऐसा अवसर है, जब समानता, समावेशन और जनभागीदारी के प्रति हमारी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता एक नए रूप में सामने आएगी। यह ऐसा समय है, जब हमारे देश की संसद को एक महत्वपूर्ण दायित्व निभाना है। उसे ऐसा कदम आगे बढ़ाना है, जो हमारे लोकतंत्र को अधिक व्यापक एवं और अधिक प्रतिनिधिक बनाए। संसद का यह निर्णय महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को नई शक्ति देगा और लोकसभा और विधानसभाओं संस्थाओं में उनका उचित स्थान सुनिश्चित करेगा।

यह क्षण इसलिए भी विशेष है, क्योंकि यह ऐसे समय में आ रहा है जब देश का वातावरण उत्सव, नवीनता और सकारात्मकता से भरा हुआ है। आने वाले दिनों में भारत के अलग-अलग हिस्सों में अनेक पर्व मनाए जाएंगे। असम के लोग रोंगाली बिहू मनाने वाले हैं और ओडिशा में महा बिशुबा पणा संक्रांति का उत्सव मनाया जाएगा। पश्चिम बंगाल में पोइला बैशाख के साथ बंगाली नववर्ष की शुरुआत होगी। केरलम में विषु पूरे उत्साह के साथ मनाया जाएगा। तमिलनाडु के लोग उत्सुकता से पुथांडु की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो पंजाब और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों में लोगों को बैसाखी के पर्व का इंतजार है। हमारे ये पावन पर्व हर किसी में एक नई आशा का संचार करने वाले हैं। भारत के साथ-साथ दुनियाभर में इन त्योहारों को मनाने वाले सभी लोगों को मैं हृदय से शुभकामनाएं देता हूं। मैं ये कामना करता हूं कि ये दिव्य और पावन अवसर हम सभी के जीवन में सुख-समृद्धि लेकर आएं।

इसी दौरान 11 अप्रैल से महात्मा फुले की 200वीं जयंती के समारोह भी शुरू होंगे। 14 अप्रैल को हम भारतवासी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की जयंती मनाएंगे। ये दोनों तिथियां हमें सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के उन मूल्यों की भी याद दिलाती हैं, जिन्होंने आधुनिक होते भारत की दिशा तय की हैं। इन्हीं प्रेरणादायी अवसरों के बीच, 16 अप्रैल को संसद की ऐतिहासिक बैठक होगी। महिला आरक्षण को लागू करने से जुड़े महत्वपूर्ण विधेयक पर चर्चा के बाद उसे पारित कराने के लिए विशेष सत्र बुलाया गया है। इसे सिर्फ एक विधायी प्रक्रिया कहना इसके महत्व को कम करके आंकना होगा। यह भारतवर्ष की करोड़ों महिलाओं की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है।

हमारी नारीशक्ति देश की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आज देश के हर सेक्टर में नारी शक्ति मिसाल बन रही है। साइंस एंड टेक्नोलॉजी से लेकर एंटरप्रेन्योरशिप तक, खेल के मैदान से लेकर सशस्त्र बलों तक और संगीत से लेकर कला के क्षेत्र में महिलाएं अपनी सशक्त पहचान बना रही हैं। हमारी माताएं-बहनें और बेटियां देश की प्रगति में अठाणी भूमिका निभा रही हैं। हमारे पारंपरिक मूल्य बताते हैं कि कोई भी समाज तभी प्रगति करता है, जब माताओं-बहनों को आगे बढ़ने के ज्यादा से ज्यादा मौके मिलते हैं। इसी सोच के साथ बीते 11 वर्षों में महिला सशक्तिकरण के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार करने पर जोर दिया गया है, इसके लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। शिक्षा तक बढ़ती पहुंच, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, वित्तीय समावेशन में बढ़ोतरी और बुनियादी सुविधाओं तक बेहतर पहुंच ने आर्थिक और सामाजिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी को मजबूती दी है।

लेकिन ये भी सच्चाई है कि इन सारे प्रयासों के बावजूद भी राजनीति और विधायी संस्थाओं में महिलाओं प्रतिनिधित्व समाज में उनकी भूमिका के अनुरूप नहीं रहा है। इस कमी को अब दूर किया जाना चाहिए, क्योंकि जब महिलाएं प्रशासन चलाने और प्रशासनिक निर्णयों में हिस्सा लेती हैं, तो उनका अनुभव और विजन बहुत काम आता है। इससे चर्चा तो समृद्ध होती ही है, क्वालिटी ऑफ गवर्नेंस में सुधार भी होता है। महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना केवल प्रतिनिधित्व का विषय नहीं है, ये हमारे लोकतंत्र को अधिक संवेदनशील, अधिक संतुलित और अधिक उत्तरदायी बनाने का प्रयास है।

पिछले कई दशकों में लोकतांत्रिक संस्थाओं में महिलाओं को उनका उचित स्थान दिलाने के लिए बार-बार प्रयास हुए हैं। समितियां गठित की गईं, विधेयकों के मसौदे प्रस्तुत किए गए, लेकिन वे कभी पारित नहीं हो सके। फिर भी, इस बात पर व्यापक सहमति रही है कि विधायी निकायों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए। सितंबर 2023 में संसद ने सर्वसम्मति से नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया था। यह मेरे जीवन के सबसे विशेष अवसरों में से एक रहा है। अब जरूरत है कि 2029 के लोकसभा चुनाव और आने वाले समय में राज्यों के विधानसभा चुनाव महिला आरक्षण के प्रावधानों के साथ कराए जाएं। महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित करने का यह अवसर हमारे संविधान की मूल भावना के साथ गहराई से जुड़ा है। हमारे संविधान निर्माताओं ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी, जहां समानता न केवल संविधान में निहित हो, बल्कि उसे व्यवहार में भी लाया जाए। विधायी संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करना, उस परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम है। यह एक ऐसे समाज के निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जिसमें राष्ट्र का भविष्य तय करने में प्रत्येक नागरिक की समान भूमिका हो।

अब इस निर्णय को और टाला नहीं जा सकता। दशकों से इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। इस पर चर्चा हुई है, इसे बार बार दोहराया गया है। अगर अब भी हम इसे आगे टालते हैं, तो उसका अर्थ यही होगा कि हम उस असंतुलन को और लंबा खींच रहे हैं, जिसे हम पहचानते भी हैं और सुधारने की क्षमता भी रखते हैं। आज भारत पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। इसलिए ये जरूरी है कि हमारी संस्थाएं सभी नागरिकों, विशेष रूप से हमारी आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की आकांक्षाओं का सम्मान करें। इससे न सिर्फ दशकों पुराना संकल्प पूरा होगा, बल्कि विकास की गति को बनाए रखने में भी बहुत मदद मिलेगी। यह हमारे लोकतंत्र को अधिक उत्तरदायी बनाने और भविष्य के अनुरूप तैयार करने की दिशा में एक अहम कदम होगा।

यह समय सामूहिक संकल्प का है। यह किसी एक सरकार, एक दल या एक व्यक्ति का विषय नहीं है। यह पूरे राष्ट्र का विषय है। हमें मिलकर इस कदम के महत्व को समझना है और मिलकर ही इसे साकार करना है। यही हमारी नारी शक्ति के प्रति हमारा दायित्व भी है, इसलिए महिला आरक्षण बिल को पारित कराने के लिए सहमति बहुत जरूरी है। इसे बड़े राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए। ऐसे अवसर हमें यह याद दिलाते हैं कि कुछ फैसले अपने समय से बड़े होते हैं। वे आने वाली पीढ़ियों की दिशा तय करते हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि लोकतंत्र की असली ताकत समय के साथ खुद को और अधिक न्यायपूर्ण और अधिक समावेशी बनाने की क्षमता में होती है।

संसद का यह ऐतिहासिक सत्र करीब आ चुका है। मैं सभी दलों के सांसदों से हमारी नारीशक्ति के लिए इस महत्वपूर्ण कदम का समर्थन करने का आग्रह करता हूं। हम जिम्मेदारी और दृढ़ संकल्प के साथ इस दायित्व को पूरा करें। आइए, हम अपने लोकतंत्र की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री।

राजस्थान की स्कूली शिक्षा : जर्जर दीवारों और एकल शिक्षकों के बीच सिसकता भविष्य

अशोक कुमार

राजस्थान की वीर प्रसूता धरा जहाँ अपनी ऐतिहासिक विरासत और शौर्य गाथाओं के लिए विश्वविख्यात है, वहीं आज यह प्रदेश अपनी शिक्षा व्यवस्था के एक अत्यंत संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहा है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र या राज्य की प्रगति का आधार स्तंभ होती है, लेकिन जब इस आधार स्तंभ की नींव ही जर्जर होने लगे और ज्ञान के मंदिर एकल शिक्षकों के सहारे सांसें ले रहे हों, तो भविष्य की तस्वीर धुंधली दिखाई देने लगती है। राजस्थान में सरकारी स्कूलों की विशाल संख्या और पहुँच के बावजूद, धरातल पर मौजूद विसंगतियाँ एक गंभीर आत्मचिंतन की मांग करती हैं।

आंकड़ों के लिहाज़ से देखें तो राजस्थान में सरकारी स्कूलों का एक व्यापक नेटवर्क है। लगभग 65,000 से अधिक सरकारी विद्यालयों के माध्यम से राज्य सरकार सुदूर ढाणियों और मरुस्थलीय इलाकों तक शिक्षा पहुँचाने का दावा करती है। हाल के वर्षों में महात्मा गांधी अंठोजी माध्यम स्कूलों की लोकप्रियता ने मध्यम और निम्न-मध्यम वर्ग के परिवारों को फिर से सरकारी तंत्र की ओर आकर्षित किया है। लेकिन यहाँ एक बड़ा विरोधाभास खड़ा होता है। एक ओर सरकार कुछ चुनिंदा स्कूलों को स्मार्ट और आदर्श बनाने पर करोड़ों खर्च कर रही है, तो दूसरी ओर ग्रामीण अंचलों के हज़ारों प्राथमिक विद्यालय उपेक्षा का शिकार हैं। क्या शिक्षा का लोकतंत्रीकरण केवल स्कूलों की संख्या बढ़ाने से संभव है, या इसके लिए प्रत्येक स्कूल में समान गुणवत्ता का होना अनिवार्य है?

राजस्थान की शिक्षा व्यवस्था का सबसे स्याह पहलू एकल-शिक्षक विद्यालय हैं। यह सुनने में ही विचलित करने वाला लगता है कि आधुनिक युग में, जहाँ हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बातें कर रहे हैं, वहाँ एक ही शिक्षक पहली से पांचवीं कक्षा तक के बच्चों के भविष्य का भाग्यविधाता बना बैठा है। एक अकेले शिक्षक पर न केवल पाँच अलग-अलग स्तरों के छात्रों को पढ़ाने की जिम्मेदारी है, बल्कि उसे मिड-डे मील का हिसाब रखना, डाक तैयार करना, जनगणना और चुनावों जैसे गैर-शैक्षिणक कार्यों को भी संभालना पड़ता है। जब शिक्षक प्रशासनिक उलझनों में फंसा होता है, तो कक्षा में छात्र केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। यहाँ सीखने की प्रक्रिया गौण हो जाती है।

छात्रों का पलायन: यही वह प्रमुख कारण है जिसकी वजह से ग्रामीण अभिभावक अपनी गाढ़ी कमाई का बड़ा हिस्सा निजी स्कूलों की फीस में झोंक देते हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि एक शिक्षक वाले स्कूल में उनके बच्चे का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। स्कूल की इमारत वह सुरक्षित स्थान होनी चाहिए जहाँ बच्चा निर्भय होकर सपने देख सके। लेकिन राजस्थान के कई जिलों से आने वाली खबरें कलेजा कंपा देने वाली होती हैं। जर्जर छतों का गिरना, दीवारों में दरारें और बारिश के मौसम में टपकती छतें-यह आज कई सरकारी स्कूलों की पहचान बन चुकी है।

एक अनुमान के मुताबिक, प्रदेश में हज़ारों की संख्या में ऐसी कक्षाएं हैं जिन्हें असुरक्षित घोषित किया जा चुका है, फिर भी संसाधनों के अभाव में बच्चे वहीं बैठने को मजबूर हैं।

भवनों की जर्जर स्थिति का सबसे बुरा असर बालिकाओं पर पड़ता है। टूटे हुए शौचालय और पानी की अनुपलब्धता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों का ड्रॉप-आउट रेट (स्कूल छोड़ने की दर) आज भी चिंताजनक है। भवनों की मरम्मत के लिए आने वाला बजट अक्सर लालफीताशाही और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाता है। जब तक बजट स्वीकृत होता है और काम शुरू होता है, तब तक इमारत की स्थिति और बदतर हो चुकी होती है। राजस्थान में समस्या केवल शिक्षकों की कमी नहीं, बल्कि उनके असमान वितरण की भी है। यह एक कड़वा सच है कि राजनीतिक रसूख और रसूखदार सिफारिशों के चलते शहरों के स्कूलों में शिक्षकों की संख्या स्वीकृत पदों से भी अधिक हो जाती है, जबकि दूर-दराज के गांवों (जैसे बाड़मेर, जैसलमेर या बांसवाड़ा) के स्कूल जीरो टीचर या सिंगल टीचर की श्रेणी में आ जाते हैं। शिक्षक संगठनों और सरकार के बीच होने वाले तबादला उद्योग ने ग्रामीण शिक्षा की कमर तोड़ दी है। जब तक शिक्षकों की नियुक्ति और पदस्थापन की एक पारदर्शी और सख्त नीति नहीं बनेगी, तब तक ग्रामीण राजस्थान के बच्चे पिछड़ते रहेंगे। इस संकट से उबरने के लिए केवल नारों और लोक-लुभावन घोषणाओं से काम नहीं चलेगा। इसके लिए एक सर्जिकल स्ट्राइक जैसी इच्छाशक्ति की आवश्यकता है।

कम छात्र संख्या वाले छोटे स्कूलों को पास के बड़े स्कूलों में मर्ज किया जाए और छात्रों के लिए सुरक्षित परिवहन की सुविधा दी जाए। इससे संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सकेगा और एक स्कूल में पर्याप्त शिक्षक उपलब्ध होंगे। प्रत्येक जिले में स्वतंत्र एजेंसियों द्वारा स्कूलों का ढांचागत ऑडिट होना चाहिए। जो भवन असुरक्षित हैं, उन्हें तुरंत ध्वस्त कर नए कमरों का निर्माण प्राथमिकता के आधार पर हो। ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा देना प्रत्येक शिक्षक के लिए अनिवार्य हो। जो शिक्षक दुर्गम क्षेत्रों में पढ़ा रहे हैं, उन्हें विशेष भत्ते और पदोन्नित में वरीयता दी जानी चाहिए। जहाँ शिक्षक उपलब्ध नहीं हो पा रहे, वहाँ स्मार्ट टीवी और रिकॉर्डेड लेक्चर्स के माध्यम से पढ़ाई को निरंतर रखा जा सकता है, लेकिन यह केवल एक अस्थायी विकल्प होना चाहिए।

राजस्थान के सरकारी स्कूल केवल ईंट-पत्थर की इमारतें नहीं हैं, वे प्रदेश के लाखों निर्धन और वंचित बच्चों के सपनों का आखिरी सहारा हैं। यदि हम उन्हें एक सुरक्षित छत और एक समर्पित शिक्षक नहीं दे सकते, तो हम एक शिक्षित राजस्थान का दावा करने का नैतिक अधिकार खो देते हैं।

जर्जर होती दीवारें और अकेले जूझते शिक्षक असल में हमारी व्यवस्था की विफलता के स्मारक हैं। सरकार को लोकप्रियता से ऊपर उठकर गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। समाज के प्रबुद्ध वर्ग, भामाशाहों और नीति-निर्माताओं को एक साथ आना होगा ताकि राजस्थान का बचपन जर्जर छतों के खौफ से मुक्त होकर ज्ञान के खुले आकाश में उड़ान भर सके।

अंततः, याद रखिये- किसी भी प्रदेश की तरक्की का रास्ता उसकी स्कूल की दहलीज से होकर गुजरता है। अगर वह दहलीज ही डगमगा रही है, तो मंजिल तक पहुँचना नामुमकिन है।

प्रोफेसर अशोक कुमार
पूर्व कुलपति कानपुर ,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

डेढ़ किलोमीटर लम्बी सड़क और सीवेज लाइन के निर्माण को तरसे लोग

- **सड़क निर्माण स्वीकृत होने के बावजूद कार्य आरम्भ नहीं किया जा रहा और केवल रोडी डाली जा रही है**
- **सड़क और सीवेज के लिये वैशाली नगर ईस्ट में रंगोली ग्रीन्स, रंगोली गार्डन, केडिया कॉलोनी के हजारों बाशिंदे पिछले तीन साल से परेशान हैं**

जयपुर। बिड़ला सभागार में 29 मार्च को नवनियुक्त आरएएस व अन्य अधिकारियों को सुशासन का मंत्र देते हुए मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और अन्य वक्ताओं ने कहा था कि मेहनत, प्रतिभा और अनुशासन के बल पर यहां तक पहुंच तो गए, लेकिन आगे का मार्ग अपने को पब्लिक का सर्वेंट मानकर मानवीय दृष्टिकोण और आपसी समन्वय से जन समस्या समाधान करने में ही निहित है। जेडीए, नगर निगम और पीएचईडी के कुछ अधिकारियों ने इस सबक को आत्मसात करने के बजाय पल्ला झाड़कर राजधानी में जयपुर को किसी भी हालत में वर्ल्ड क्लास स्मार्ट सिटी न बनने देने की शपथ ले रखी है। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री व स्थानीय विधायक कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ के निर्देश के बावजूद वैशाली नगर ईस्ट में केवल डेढ़ किमी लम्बी सड़क और सीवेज लाइन के निर्माण के लिए रंगोली ग्रीन्स, रंगोली गार्डन, केडिया कॉलोनी के हजारों बाशिंदे पिछले तीन साल से दिन-रात एक किए हुए हैं। राज्यवर्धन राठौड़ के निर्देशों के बावजूद अभी 400 मीटर दूरी में ही सीवेज लाइन डाली गई है। पीएम गति शक्ति की स्पष्ट गाइडलाइन है कि सीवेज, पेयजल लाइन आदि डालने के साथ ही सड़क की मरम्मत या निर्माण कार्य भी होना चाहिए। यहां सड़क निर्माण स्वीकृत होने के बावजूद कार्य आरम्भ नहीं किया जा रहा और केवल रोडी डाली जा रही है।

यहां के नागरिकों के सवाल करने पर जेडीए अधिशासी अभियंता कैलाश बैरवा ने बताया कि सीवेज लाइन का कार्य पीएचईडी के अधिकार क्षेत्र में है जबकि पीएचईडी के अधिशासी अभियंता नीरज पिपलोदा ने 20 दिन पहले बताया था कि कुछ ही दिनों में सीवेज लाइन डाल दी जाएगी।

इस कार्य में देरी का कारण कुछ लोग यह बताते हैं कि सीवेज और सड़क निर्माण एक साथ हो गया तो हर मानसून के बाद मरम्मत के नाम पर मिलने वाला बजट इस बार नहीं मिल पाएगा। मरम्मत में निर्माण से ज्यादा सम्भावनाएं हैं। परिणामस्वरूप एक चक्र बन गया है, बारिश और खराब गुणवत्ता के चलते सड़क टूटना, इसकी आंशिक मरम्मत, किसी लाइन डालने के लिए दूसरी एजेंसी द्वारा खुदाई, अस्थाई पैचवर्क और फिर से खराब स्थिति। अवैध अतिक्रमण, मैरिज गार्डन्स के आगे अवैध पार्किंग, ओवरलोड वाहनों के कारण स्थानीय नागरिकों का जीवन पहले ही नरक के समान हो गया है। अब इस सीवेज-सड़क ड्रामा के कारण इन्हें आए दिन स्थानीय विधायक, नगर निगम, जेडीए और पीएचईडी के एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं।

मीना सिन्हा का कहना है कि पिछले तीन वर्षों से अधिक समय से महाराणा प्रताप मार्ग पर लगभग 1.5 किलोमीटर लंबा टुकड़ा, जो रंगोली ग्रीन्स सोसाइटी और आसपास के कई आवासीय क्षेत्रों को जोड़ता है, लगातार खराब स्थिति में बना हुआ है। जो एक सामान्य सड़क निर्माण और रखरखाव का मामला होना चाहिए था, वह अब प्रशासनिक अक्षमता, समन्वय की कमी और प्रमुख नागरिक एजेंसियों द्वारा खराब क्रियान्वयन का उदाहरण बन गया है।